ओम् शान्ति 12-1-07 मधुबन

''प्राण अव्यक्त बापदादा का मधुर सन्देश''

– –दादी गुल्जार

आज बापदादा के पास जाना हुआ और सदा के सदृश्य दूर से ही दृष्टि की आकर्षण में खिंचते नजदीक पहुंच गई और मिलन मनाने में समा गई। कुछ समय बाद बाबा बोले, आओ मेरी त्रि-तख्त नशीन बच्ची क्या समाचार लाई हो ? मैं मुस्कराती रही। बाबा बोले, बापदादा ने चारों ओर चक्कर लगाते देखा कि सब बच्चे ब्रह्मा बाप के स्मृति दिवस के स्नेह की लहर में बहुत अच्छे याद के भिन्न-भिन्न रूप से प्रोग्राम कर रहे हैं। बापदादा खुश है कि ब्रह्मा बाप की साकार पालना और प्यार की छाप बहुत अच्छी है और हर एक के अन्दर बाप समान बनना है, अव्यक्त फरिश्ता बनना ही है - यह संकल्प भी इमर्ज है। लेकिन ब्रह्मा बाप के सम्पन्न बनने की विशेष विधि क्या रही, वह भी इमर्ज रखनी है। ब्रह्मा बाप सदा स्वमान और सम्मान देने के बैलेन्स में रहे। इस बैलेन्स में बच्चों को पूरा फालो करने में अब तक अन्तर है क्योंकि हर आत्मा को सम्मान देना ही अति सहज स्वयं सम्मानधारी बनना है। दूसरे को सम्मान देना ही सम्मान लेना है। इससे सर्व के दिल का स्नेह लेने के पात्र बन जाते हैं। दिल के प्यार के साथी बन जाते हैं। इसलिए देख रहे हो कि कोई कितना भी कोई भी कारण से रूठ जाते, भाग जाते फिर भी साकार निराकार बाप की याद भूल नहीं सकते। याद आती ही है क्योंकि बाप ने सबको दिल के प्यार, सम्मान से साथी बना लिया। देखो बाप ने हर एक वर्ग को सम्मान दिया। छोटे बच्चे को महात्मा से ऊंचा बनाया, कुमारियों को 100 ब्राह्मणों से ऊंचा बनाया, कुमारों को डबल शक्ति से जो चाहे कर लेने के शक्ति रूप बनाया, प्रवृत्ति वालों को महात्माओं से भी श्रेष्ठ बनाया। बांधेलियों को निरन्तर स्नेही याद में रहने वाली बनाया। ऐसे ही बापदादा चाहते हर बच्चा स्वमानधारी सो सम्मानधारी बने तो समस्या बदल समाधान स्वरूप सहज बन जायेंगे और चारों ओर स्नेह के सागर की लहरें लहराती रहेंगी। इस वर्ष बापदादा यही चाहते हैं कि हर बच्चे समस्या मुक्त, स्वमानधारी सो सम्मानधारी बन मेहनत वा युद्ध करने से मुक्त बन मास्टर सर्वशक्तिवान स्थिति द्वारा सदा सन्तुष्ट रहना और सन्तुष्ट करना - इसमें सफलता स्वरूप बन उड़ते रहें। यह क्यों हुआ, यह नहीं किया वा किया, संकल्प में भी न आये। बस यही रहे जो हो चुका वह भी अच्छा, जो हो रहा है वह भी अच्छा, जो होना है वह भी अच्छा, यही परिवर्तन भावना सदा बनी रहे।

यह तो बच्चे जानते ही हैं कि जितना लगन बढ़ती है तो विघ्न भी नये-नये प्रकार के बढ़ने ही हैं लेकिन यह विघ्न वा समस्यायें स्थिति रूपी दीपक में ज्योति बढ़ाने के लिए घृत का काम करने वाले हैं। और ही ज्वालामुखी रूप बनाने के निमित्त बनते हैं क्योंकि यह तो ज्ञान इमर्ज रूप में है ही और दृढ़ संकल्प भी है कि विघ्नों का काम है आना और आपका काम है अनुभवी बन विघ्न-विनाशक बन सफलता को गले का हार बनाना और ही अलर्ट, विजयी बनना। अब बच्चों का काम है वर्तमान समय के तमोगुणी वायुमण्डल को पापाचार, भ्रष्टाचार को अति में बढ़ने की गन्दी वृत्तियों को परिवर्तन करने लिए स्वयं भी मन्सा शक्ति रूप से बुद्धियोग द्वारा गन्दी वृत्ति को मिटाना, गन्दी बुद्धियों को बदलना। इसलिए सदा एकरस, एकाग्र स्थिति में स्थित रहने का अटेन्शन रखना क्योंकि अब सिर्फ वाणी से नहीं लेकिन श्रेष्ठ वृत्ति से वायुमण्डल को बदलना है। इसलिए रहमदिल दयालु, कृपालु और साथ में मास्टर सर्वशक्ति स्वरूप बनना है। उसके रिटर्न में एडवांस बापदादा अपने अमूल्य बांहों का हार बच्चों के गले में डाल रहा है। ऐसा कहते बापदादा बच्चों के स्नेह में बहुत समाये हुए थे। फिर बाबा ने दादियों को याद किया, नयनों में इमर्ज कर बोले दादियों ने तपस्या और सेवा दिल से की है इसलिए सब दिल से याद करते। बापदादा के दिलतख्तनशीन हैं ही। सब दादियों को बहुत-बहुत याद-प्यार देना। ऐसा मिलन मनाते हमें भी साकार वतन में भेज दिया। ओम् शान्ति।